राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

आश्वासनान्यसत्यानि, चिरं स्थातुं न शक्नुयुः ।
न केन दुष्फलं तेषां, दुःखदमुपभुज्यते ? ॥७९॥

झूठे आश्वासन ज्यादा समय तक नहीं ठहर सकते । उनका दुःखदायी दुष्परिणाम किसको नहीं भोगना पड़ता ?

False assurances cannot last long. Who does not need to suffer from their negative results/effects?

इतिहासं स्वकीयं ये, यथार्थं प्रस्तुवन्ति न ।
प्रच्छन्नाः शत्रवो नूनं, किं ते सन्ति न ? कथ्यताम् ॥८०॥

जो अपने इतिहास को सही रूप से प्रस्तुत नहीं करते, क्या वे छिपे दुश्मन नहीं हैं ? कहो ।

Do say, aren't the hidden enemies those that do not present history in the proper manner?

इष्टो हरिजनोद्धारः, कस्य नास्तीति कथ्यताम् ।
आर्थिकः शैक्षिकस्तेषां, स्तरः पूर्वं सुधार्यताम् ॥८१॥

हरिजनों का उद्धार किसको इष्ट नहीं है ? कहिये। पहले उन हरिजनों का आर्थिक और शैक्षिक स्तर सुधारा जाय ।

Who does not want the progress of the Harijans? Do tell. First, their economic and education level should be improved.

इन्द्रिय-देव-वासार्थं, मर्त्तर्य-देहो विनिर्मितः ।
परस्परं विनाश्येमं, निर्माताऽस्य न कोप्यताम् ॥८२॥

इन्द्रियरूपी देवताओं के निवास के लिये यह मनुष्य-शरीर बनाया गया है। इसे आपस में नष्ट करके इसके निर्माता को प्रकुपित नहीं करना चाहिये ।

This human body was made for the gods in the form of senses. We should not make the Creator angry by destroying each other's bodies.

इन्द्रियैर्मनसा पूर्णा, यतस्तृप्तिर्यदाऽऽत्मनः ।
तत्सौन्दर्यं तदा मान्यं, किमप्युद्बोधकं च यत् ॥८३॥

इन्द्रियों और मन से जिस वस्तु के कारण जब आत्मा को पूर्ण तृप्ति होती हो, तब उसे सौन्दर्य मानना चाहिये और वह कुछ उद्बोधककारी भी हो ।

That thing should be considered beautiful which fully satisfies Atma through senses and mind, and can be enlightening/revealing, also.

इच्छां निर्वाचकानां ये, पूरयन्ति न कामपि ।
दुष्कीर्तिमाप्य ते तेभ्यो, लभन्तेऽग्रे मतं नहि ॥८४॥

जो निर्वाचन-कर्ताओं की किसी भी इच्छा को पूरी नहीं करते, दुष्कीर्ति पाकर वे आगे उनसे मत नहीं पाते हैं ।

Bad repute will befall those who do not fulfil any of the voter's wishes and will also not get their votes again.

इच्छाशक्तिर् ज्ञानशक्तिः, क्रियाशक्तिश्च यत्र हि ।
तत्राशु सर्वकार्याणि सिध्यन्ति, नात्र संशयः ॥८५॥

इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति ये तीन शक्तियाँ जहाँ होती हैं, वहाँ सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं ।

There is no doubt that all work will be fulfilled/accomplished where there all three: the will power, the knowledge and the action are present.

इच्छां निर्वाचकानां यद्, दलं पूरयते नहि ।
सत्तायां तद् दलं कुत्र, चिरञ्जीवति ? कथ्यताम् ॥८६॥

जो दल निर्वाचन-कर्ताओं की इच्छा पूर्ण नहीं करता है, वह दल कहाँ चिरंजीवी हुआ है ? बताओ ।

Which party is long-lived that does not fulfil the wishes of the voters? Do say! |,

ईश्वरः कुत्र नैवास्ति, कुमार्गाद् वारयत्यसौ ।
तत्रोपेक्षां प्रकुर्वाणः, कुत्र दुःखं न विन्दति ? ॥८७॥

ईश्वर कहाँ नहीं है? वह तो सभी को कुमार्ग में जाने से रोकता है। उसकी उपेक्षा करने वाला कहाँ दुःख नहीं पाता है ?

Where is the reno God? He is stopping everyone from going on the wrong path. Whereas the one who ignores him, does he not suffer?